ISSN 2277-2359
Vol-11-Issue-12
December- 2019

सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

डॉ. विष्णु कुमार[1]

[1]सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

शोध-साराशं

शिक्षा में शोध प्रबन्धों का शैक्षिक महत्त्व उनकी सार्थकता का द्योतक होता है। प्रस्तुत शोध कार्य जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना हैं, जो शिक्षा के विभिन्न आयामों को प्रभावित कर सकता है। प्रस्तुत शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर, परिवेश, विद्यालयों के प्रकार, लिंगात्मक प्रभाव व संकायों के प्रकारों का प्रभाव अधिकांशतः नहीं पड़ता है। सभी परिणामों को तथ्यों की कसौटी पर कसते हुए वर्तमान परिपे्रक्ष्य में हम यह कह सकते हैं कि 20वीं शताब्दी कें संसार में जहां विभिन्न परिवर्तन आ रहे है, वही नैतिक मूल्यों में गिरावट दिन प्रतिदिन तेजी से बढ़ती हुई दिखाई दे रही है। यह एक सार्वभौमिक सत्य है कि विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों की इस गति से होने वाला पतन समाज को विशेष रूप से प्रभावित कर रहा है, क्योंकि विद्यार्थी ही राष्ट्र के भावी नागरिक हैं। अध्यापक जो कि राष्ट्र के इस भावी नागरिक का निर्माण करते हैं, उनसे यह आशा की जाती है कि वे विद्यार्थियों में इन नैतिक मूल्यों (नैतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, धार्मिक मूल्य व राजनैतिक मूल्य) का विकास करेंगे। तभी हम एक आदर्श समाज की स्थापना के लक्ष्य को प्राप्त कर पाएंगे और नैतिक मूल्यों को अपने स्थान पर पुनः स्थापित कर पाएंगे। इसके लिए शिक्षकों एवं माता-पिता को नैतिक गुणों के शिक्षण की व्यवस्था करनी चाहिये। बच्चे हमेशा अनुकरण से ही सीखते हैं। अतः माता-पिता एवं अध्यापकों को उनके सम्मुख नैतिक गुणों के आदर्श प्रस्तुत करने चाहिये। अतः यह कहा जा सकता हैं कि यदि बालक का पारिवारिक व विद्यालय वातावरण नियमित, अनुशासित

Copyright©authors

ISSN 2277-2359
Vol-11-Issue-12
December- 2019

व स्वस्थ हो तो बालक में हम सभी गुणों (नैतिक मूल्य सामाजिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, धार्मिक मूल्य व राजनैतिक मूल्यों) का विकास कर पाएंगे। तथा शोधार्थी ने सम्पूर्ण योजनाबद्ध तरीके से कार्य सम्पन्न कर जो निष्कर्ष प्राप्त किए उनकी वास्तविक उपादेयता तब सिद्ध होती है जब वे समाज, शिक्षक, अभिभावक एवं विद्यार्थी के लिये दिशा-निर्देश प्रदान करने वाले हो। इस दृष्टि से शोध की उपादेयता हो सकती है।

प्रस्तावना

जीवन की सफलता का आधार शिक्षा में समाहित है। प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति में यह विशेषता रही है कि विद्यार्थी का समग्र रूप से विकास हो तथा विद्यार्थी के शारीरिक एवं मानसिक विकास के साथ-साथ उनमें सत्य, अहिंसा, प्रेम, दया परोपकार, आत्मबलिदान, देश सेवा आदि श्रेष्ठ मानवीय एवं नैतिक मूल्य स्वतः ही विकसित हो। तभी तो भारत जगत गुरू के पद से विभूषित रहेगा। अगर किसी भी देश का भविष्य देखना है, तो वहां के बच्चों को देखों क्योंकि शिक्षित बालक ही कल का सुयोग्य नागरिक बनता है। इसके लिए सर्वप्रथम यह प्रयास किया जाना चाहिए कि ऐसी शिक्षा प्रदान की जाए जिससे कि बालक का सर्वांगीण विकास हो सके इसके अन्तर्गत परिवार, समाज, विद्यालय का वातावरण एवं विद्यालय द्वारा प्रदान की गई शिक्षा व्यवस्था का महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। उसका उद्देश्य चरित्र प्रवृत्ति, कौशल और नैतिक गुणों का व्यक्ति में निर्माण करना है परन्तु आज समाज में चारों और नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों में गिरावट देखने को मिलती है इस गिरावट के फलस्वरूप शिक्षा के क्षेत्र में भी गिरावट देखने को मिल रही है। उक्त स्थिति ने आज मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता की अनुभूती कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। मूल्य परक शिक्षा से तात्पर्य उस शिक्षा से है। जिसमें हमारे नैतिक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को समाहित किया जाये। इसमें विभिन्न विषयों को मूल्यपरक बनाकर उनके माध्यम से विभिन्न मूल्यों को छात्रों के व्यक्तित्त्व में समाहित करने पर बल दिया जाए, जिससे उनका सन्तुलित एवं सर्वतोन्मुखी विकास हो सके।

हमारी युवा पीढ़ी का विकास तभी पूर्णतया सम्भव है जब तक हम उसका सही मार्गदर्शन करते है और उन्हें जीवन के उन व्यवहारिक पक्षों से अनुभूत कराया जाता रहे जो समाज सम्मत है। इसी से वह अपनी संस्कृति से भी परिचित हो जायेगे और उसे सुरक्षित भी रख पायेंगे। नैतिक आचरण वह अपने आप को जीवन के व्यवहारिक पक्ष से जोड़ने पर ही कर

Copyright©authors

ISSN 2277-2359
Vol-11-Issue-12
December- 2019

पायेगे, नैतिकता बालक के सर्वांगीण विकास का आधार होती है। शिक्षा के माध्यम से बालक को इन पक्षों से अवगत कराया जा सकता है। समय के साथ-साथ शिक्षा का स्वरूप व उद्देश्य भी बदलता रहता है। आज की परिस्थितियों में अनुकूल शिक्षा की व्यवस्था द्वारा शिक्षा में नैतिक पक्ष जोड़कर व्यक्ति में मानवीय गुण विकसित किए जा सकते हैं, ताकि वह अपने जीवन का सदुपयोग मानव कल्याण में कर सके। विश्व के सभी देशों में नैतिकता का महत्त्व है। किन्तु भारत देश में हमारी सभ्यता और संस्कृति के अनुरूप नैतिक मूल्यों या नैतिक शिक्षा का महत्त्व अत्यधिक है इसलिए पाठ्य विषयों को मूल्योन्मुख बनाया जाता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि पाठ्य-पुस्तके एवं उनमें निहित सामग्री इस प्रकार की हो जिसके माध्यम से विभिन्न नैतिक, सांस्कृतिक आदि मूल्यों की शिक्षा सहज रूप से दी जा सके। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं है कि हमारी वर्तमान पाठ्य- पुस्तके, मूल्यपरक शिक्षा के लिए वांछित रूप में समृद्ध नहीं है, परन्तु प्राचीन समय में शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य अधिगमकत्र्ता का चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्त्व निर्माण हुआ करता था लेकिन धीरे-धीरे भारत के विद्यालयों में मूल्य प्रधान शिक्षा का प्रचार तीव्रता से हुआ। वर्तमान विद्यालयों के छात्रो में नैतिकता का विकास हो। इसी ध्येय को लेकर समय पर विभिन्न आयोगों व नीतियों का निर्माण किया गया।

मूल्यों का वर्गीकरण

समय परिवर्तन के साथ-साथ मूल्य बदलते रहते है। आज के वैज्ञानिक एवं उपभोक्तावादी युग में शिक्षा के प्रसार के बावजूद, जीवन मूल्यों में कमी दिखाई दे रही है। मूल्य आधारित जीवन शैली की जरूरत को ध्यान में रखते हुए यह जरूरी है कि विद्यार्थी में मूल्यों के विकास हेतु विशिष्ट व संगठित प्रयास किये जाये। समय की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए दार्शनिकों एवं अन्य विद्वानों ने विविध प्रकार के मूल्यों को निश्चित किया है तथा उन्हें वर्गीकृत करने का प्रयत्न किया है। प्रमुख मूल्य निम्न हैं -

1. **नैतिक मूल्य:** ईमानदारी, त्याग, निष्ठा, करूणा, दया, उत्तरदायित्व की भावना, नम्रता आदि नैतिक मूल्यों के अन्तर्गत आते हैं।

2. **सामाजिक मूल्य:** सहयोग, दया, करूणा, विश्वास, सहृदयता, सद्भाव आदि सामाजिक मूल्यों के अन्तर्गत आते है।

Copyright©authors

ISSN 2277-2359
Vol-11-Issue-12
December- 2019

3. **आर्थिक मूल्य:** सब के लिए स्वतन्त्रता, न्याय एवं अवसर की समानता, सभी प्रकार की दासताओं का उन्मूलन आदि मूल्यों का समावेश किया जा सकता है।

4. **धार्मिक मूल्य:** भक्ति, पूजा, साम्प्रदायिक सद्भाव आदि धार्मिक मूल्यों में समाहित किये जाते हैं।

5. **राजनैतिक मूल्य:** नेतृत्व, जागरूकता, सेवाभाव आदि इसमें शामिल किये जाते हैं।

6. **आध्यात्मिक मूल्य:** धर्म, दर्शन, तत्त्वज्ञान, मीमांसा, योग, ध्यान आदि मूल्यों के अन्तर्गत आते हैं।

7. **मानवीय मूल्य:** करूणा, परोपकार, परहित वसुदैव कुटुम्बकम आदि की भावना, भाईचारा, समन्वयता, समानता आदि मानवीय गुण या मूल्य है।

8. **राष्ट्रीय मूल्य:** राष्ट्रभक्ति, राष्ट्र प्रेम, राष्ट्रीय सद्भावना, राष्ट्र के प्रति आत्म बलिदान की भावना तथा राष्ट्रीय एकता व राष्ट्रीय प्रतीकों के प्रति सम्मान आदि।

9. **सांस्कृतिक मूल्य:** प्राचीन विरासत, सभ्यता व संस्कृति, कला व गौरवशाली अतीत के प्रति सम्मान, सांस्कृतिक मूल्यों में शामिल किये जाते हैं, जो महान देशों की महान परम्पराओं से संबद्ध होते हैं।

समस्या का क्षेत्र

1. नैतिक मूल्य ।
2. सामाजिक मूल्य।
3. आर्थिक मूल्य।
4. धार्मिक मूल्य।
5. राजनैतिक मूल्य।

समस्या का औचित्य

प्राचीनकाल से ही मनुष्यों के लिए नीति तथा धर्म का पालन करना अनिवार्य माना जाता रहा हैं और मनुष्य समाज में रहते हुए इस प्रकार के आचरण का निर्वहन सरलता से कर लेता

Copyright©authors

ISSN 2277-2359
Vol-11-Issue-12
December- 2019

था किन्तु वर्तमान परिदृश्य में मनुष्य विकास की अंधी दौड़ में इस तरह भागा जा रहा है कि मानवता, नैतिकता आदि गुण बहुत पीछे छूट गए है वर्तमान समय में माता-पिता अपने बालकों को नैतिकता व मूल्यों का ज्ञान देने के बजाय अंग्रेजी शिक्षा देना अति-आवश्यक समझते हैं। आज के समय में हमारी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति की छवि धूमिल होती जा रही है। आज का युवा वर्ग अराजकता और अनुशासनहीनता का पर्याय बनता जा रहा है और इसका एकमात्र कारण हैं कि विद्यालय से ही उसमें नैतिक शिक्षा का अभाव रहा है। उक्त वातावरण ने मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता की ओर सभी का ध्यान आकृष्ट कर लिया है इसलिए विद्यालय का वातावरण शिक्षकों का व्यक्तित्त्व एवं व्यवहार तथा विद्यालय में उपलब्ध भौतिक सुविधाएं छात्रों को मूल्योन्मुख बनाने में विशेष भूमिका निभाते है। राजस्थान राज्य में उच्च माध्यमिक स्तर पर नैतिक मूल्य शिक्षा की क्या स्थितियां है व उनमें गुणात्मक एवं परिणामात्मक क्या-क्या सुधार किये जा सकते है, नैतिक मूल्यों को बढ़ावा किस प्रकार दिया जा सकता है। इन सब बातों से प्रभावित होकर ही शोधार्थी ने सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के प्रतिजागरूकता के अध्ययन का प्रयास किया है। अतः विद्यार्थियों के सन्दर्भ में पांच मूल्यों-नैतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, धार्मिक मूल्य एवं राजनैतिक मूल्य का अध्ययन करना शोधार्थी द्वारा निश्चित किया गया है।

समस्या का कथन

"सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।"

शोध की परिकल्पनाएं

- सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों (नैतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, धार्मिक मूल्य व राजनैतिक मूल्य) का तुलनात्मक अध्ययन।
- सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।
- सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

Copyright©authors

ISSN 2277-2359
Vol-11-Issue-12
December- 2019

- सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।
- सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।
- सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के राजनैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

न्यादर्श

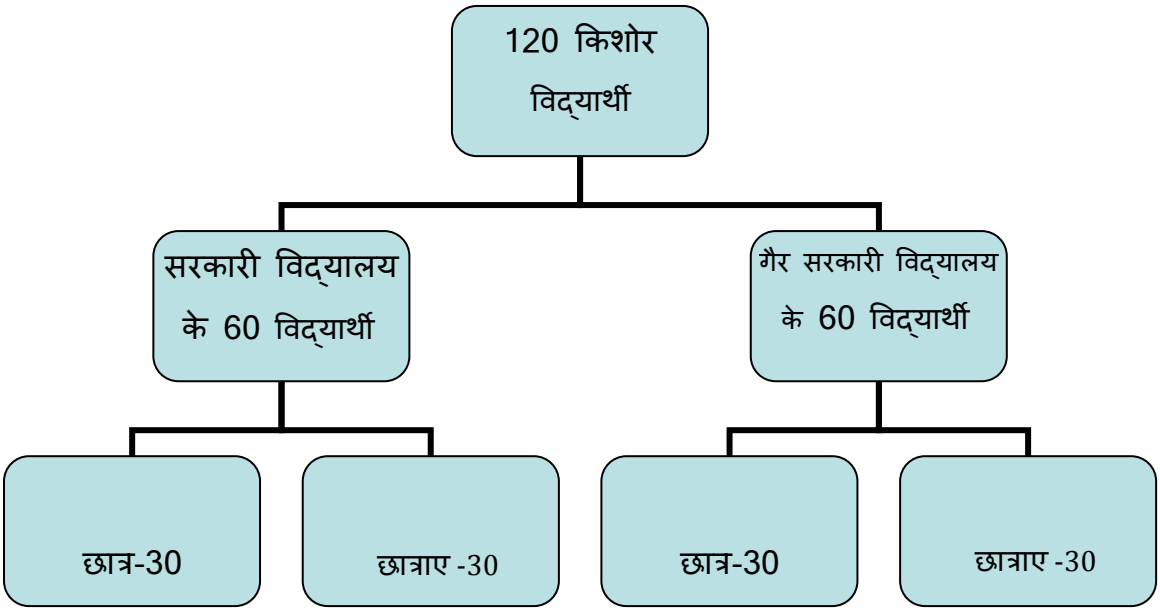

अध्ययन की परिसीमाएं

1. प्रस्तुत अध्ययन जयपुर जिले के विद्यालयों तक ही सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों तक ही सीमित है।
3. प्रस्तुत अध्ययन 120 किशोर विद्यार्थियों पर ही किया गया है।
4. प्रस्तुत अध्ययन द्वारा मूल्यों का परीक्षण किया गया है - 1. नैतिक 2.सामाजिक मूल्य, 3. आर्थिक मूल्य, 4. धार्मिक मूल्य, 5. राजनैतिक मूल्य।

परिकल्पनाओं के आधार पर निष्कर्ष

Copyright©authors

ISSN 2277-2359
Vol-11-Issue-12
December- 2019

1. सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों (नैतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, धार्मिक मूल्य व राजनैतिक मूल्य) का तुलनात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष- सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता क्योंकि दोनों स्तर के ही विद्यालयों में वातावरण नियमित, स्वस्थ व अनुशासित होता है, जिससे सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों में नैतिक मूल्य समान स्तर पर पाए जाते हैं तथा नैतिक मूल्यों को विकसित करने के लिए पाठ्यक्रम को भी मूल्यपरक बनाने पर जोर दिया जा रहा है व नैतिक शिक्षा को एक विषय के रूप में शामिल किया गया है। सरकारी विद्यालय के छात्र व छात्राओं में गैर सरकारी विद्यालय के छात्र व छात्राओं में नैतिक मूल्य समान स्तर पर पाए गए उनमें कोई सार्थक अन्तर नहीं है। क्योंकि सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में छात्र व छात्राओं को समान रूप से शैक्षिक एवं नैतिक वातावरण दिया जाता है जिसके कारण उनका नैतिक विकास समान स्तर पर होता है परन्तु सरकारी विद्यालय के छात्रों व गैर सरकारी विद्यालय की छात्राओं के नैतिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया जाता है। गैर सरकारी स्तर की छात्राओं में सरकारी स्तर के छात्रों से अधिक नैतिक मूल्य पाए जाते हैं क्योंकि सरकारी स्तर पर छात्रों के केवल पाठ्यक्रम पूरा कराने पर विशेष जोर दिया जाता है जबकि गैर सरकारी विद्यालयों में शुद्ध वातावरण पर ध्यान दिया जाता है तथा बालक के प्रत्येक पक्ष को विकसित करने का प्रयास किया जाता है।

2. सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष- सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया क्योंकि सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय दोनों ही विद्यार्थियों के शिक्षण अधिगम के साथ-साथ उनका चारित्रिक, व्यक्तित्व व नैतिक मूल्यों के विकास पर बल देता है। सरकारी विद्यालय के छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है इसी प्रकार में गैर सरकारी विद्यालय के छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्यों में भी कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है और न सरकारी छात्र व छात्राओं का गैर सरकारी छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्यों से कम या ज्यादा पाया जाता है। अतः कहा जा सकता है कि सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में छात्र व छात्राओं को समान अवसर व

Copyright©authors

ISSN 2277-2359
Vol-11-Issue-12
December- 2019

सुविधाएं दी जाती है जिससे छात्राएं भी अपने कार्य को बड़े आत्मविश्वास से कर पाती है। उनकी रूचि अभिवृत्तियां, योग्यताएं, निखर कर सामने आती है तथा उनमें आत्मविश्वास, सहयोग, करूणा, नम्रता, कत्र्तव्य पालन की भावना, व मूल्यों का विकास होता है जिससे छात्र व छात्राओं दोनों में ही नैतिक मूल्य समान रूप से विकसित होते हैं। अतः उनके नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

3. सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष- सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में अन्तर पाया जाता है क्योंकि गैर सरकारी विद्यालयों में विद्यार्थियों को जो शिक्षा दी जाती वह मूल्यों पर आधारित होती है तथा शिक्षा का पाठ्यक्रम समाज की आवश्यकतानुसार बदलता रहता है जबकि सरकारी विद्यालयों में वर्षों से एक ही पाठ्यक्रम चलता है वह समाज के नवीन मूल्यों के अनुसार नहीं बदलते हैं अतः कहा जा सकता है कि गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्य सरकारी विद्यार्थियों से ज्यादा पाए जाते हैं परन्तु सरकारी विद्यालय के छात्र व छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है उसी प्रकार गैर सरकारी विद्यालय के छात्र व छात्राओं के भी सामाजिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है क्योंकि दोनों ही विद्यालय के विद्यार्थियों के साथ समान व्यवहार किया जाता है चाहे बालक किसी भी जाति या वर्ण का हो उनके लिए समान अवसर व सुविधाएं दी जाती है। जिससे उनमें सहयोग, सहानुभूति, अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ेगी। जबकि सरकारी विद्यालय के छात्रों व गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों के सामाजिक मूल्यों में अन्तर पाया जाता है इस प्रकार गैर सरकारी छात्रों में सरकारी छात्रों से अधिक सामाजिक मूल्य पाए जाते है। अतः स्पष्ट होता है सरकारी स्तर की छात्राओं व गैर सरकारी छात्रों में व सरकारी छात्रों व गैर सरकारी छात्राओं में सामाजिक मूल्य समान स्तर पर पाए जाते हैं। अतः उनमें अधिकांशतः अन्तर नहीं पाया जाता है।

4. सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष- सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया जाता हैं क्योंकि अच्छी आर्थिक स्थिति वाले माता-पिता अपने बच्चों को सरकारी विद्यालयों के बजाय गैर सरकारी विद्यालयों में पढ़ाना पसन्द करते हैं, इस प्रकार

Copyright©authors

ISSN 2277-2359
Vol-11-Issue-12
December- 2019

गैर सरकारी विद्यार्थियों की आर्थिक स्थिति अच्छी होती है, तथा गैर सरकारी विद्यालय व उनके माता-पिता उन्हें सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम होते हैं जिससे विद्यार्थी गलत रास्तों से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने की कोशिश नहीं करता जबकि सरकारी विद्यार्थी एक गरीब परिवार से होने की वजह से अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिए वह कभी-कभी गलत रास्ते को भी चुन लेता है। अतः स्पष्ट होता है कि गैर सरकारी स्तर के विद्यार्थियों में सरकारी विद्यार्थियों की अपेक्षा आर्थिक मूल्य उच्च पाए जाते हैं। जबकि गैर सरकारी विद्यालय के छात्र व छात्राओं के आर्थिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं क्योंकि गैर सरकारी विद्यालय में वे ही बच्चे पढ़ते हैं जिनका आर्थिक स्तर मजबूत होता है फिर चाहे, बालक हो या बालिका दोनों को समान परिवेश, आर्थिक स्तर तथा शिक्षण प्राप्त हो रहा है। दोनों का उद्देश्य अच्छा शिक्षण प्राप्त करना है क्योंकि अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति उन्हें आसानी से हो जाती है। इसके लिए वह गलत आर्थिक नीतियों को नहीं चुनते है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि गैर सरकारी विद्यालय के छात्र व छात्राओं के आर्थिक मूल्यों में समानता पाई जाती है।

5. सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष- सरकारी गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं क्योंकि दोनो ही स्तर पर उनको स्वस्थ वातावरण उपलब्ध कराया जाता है ओर वहां इस प्रकार की गतिविधियां चलाई जाती है, जैसे प्रार्थना, ध्यान, योग, धार्मिक त्यौहार व महापुरूषों की जयंतियां आदि इन गतिविधियों से बच्चों में धार्मिक मूल्य विकसित किए जाते है। इसी कारण शिक्षण कार्य से पूर्व भगवान को याद करने के लिए प्रार्थना आयोजित की जाती है तथा दोनो स्तर के विद्यालयों में यह प्रयास किया जाता है कि बालक निष्पक्ष रूप से सभी धर्मों का सम्मान व आदर करे व किसी एक विशेष धर्म को मुख्य न माने तथा उनकी नजर में सभी धर्म अच्छे हो, व प्रत्येक धर्म में अपनी-अपनी कोई अच्छाइयाँ है यह बात स्पष्ट करते हैं जिससे बालक का धार्मिक दृष्टिकोण निष्पक्ष होता है। जबकि सरकारी विद्यालय के छात्र व छात्राओं के धार्मिक मूल्यों में अन्तर पाया जाता है क्योंकि छात्राओं को यह डर हमेशा रहता है कि गलत तरीकों से धन कमाने पर भगवान उसकी सजा कभी न कभी अवश्यक देता है जबकि छात्रों मे यह डर कम पाया जाता है, तथा छात्र अपने भोग-विलास के लिए अत्यधिक धन एकत्रित करने के लिए वह अपने मूल्यों को भूल जाता है छात्राओं का मानना है कि पूजा-भक्ति से नैतिकता को बढ़ावा मिलता है। अतः

Copyright©authors

ISSN 2277-2359
Vol-11-Issue-12
December- 2019

प्रत्येक व्यक्ति को कुछ न कुछ धार्मिक कार्यों में भाग लेना चाहिए जिससे आत्मिक शान्ति के साथ भगवान उनकी इच्छाओं को पूरा करेंगे। जबकि छात्रों में भगवान के प्रति आस्था तो होती है परन्तु छात्राओं की तुलना में कम। क्योंकि छात्र धर्म के आधार पर व्यक्तियों को गुटों में बाँट लेता है तथा अपनी स्वार्थ पूर्ति पर विशेष ध्यान देता है अतः स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि सरकारी छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में नैतिक मूल्य उच्च पाए जाते हैं।

6. सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के राजनैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष- सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के राजनैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है और न ही सरकारी छात्र व छात्राओं के राजनैतिक मूल्यों में कोई अन्तर पाया जाता, न ही गैर सरकारी छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्यों में कोई अन्तर पाया जाता है क्योंकि किशोर विद्यार्थियों का मुख्य उद्देश्य शिक्षण-अधिगम करना है। उनका आकर्षण राजनैतिक गतिविधियों में होता तो है परन्तु मात्र मनोरंजन के लिए, या कहे तो राजनैतिक कार्यों मंे विशेष रूचि न होना क्योंकि चाहे सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी हो या गैर सरकारी विद्यार्थी हो वे राजनैतिक गतिविधियों की जानकारी तो रखता परन्तु मात्र शिक्षण के लिए। दोनों स्तर के विद्यालयों में राजनैतिक मूल्यों को पाठ्यक्रम का विषय बनाया है। जहां पर समान रूप से राजनैतिक गतिविधियों, उनके प्रति कत्र्तव्यों की जानकारी दी जाती है। और हर विद्यार्थी जानकारी को समान रूप से प्राप्त करता है। अतः विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों में राजनैतिक मूल्य समान रूप से पाए जाते हैं। परन्तु यह कहा जा सकता है जब विद्यार्थी उच्च शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश लेता है तब उनके राजनैतिक मूल्यों में बदलाव आ जाता है। क्योंकि वहां छात्रसंघ चुनाव प्रक्रिया होती है जबकि विद्यालय स्तर पर इस प्रकार का छात्रसंघ व दल नहीं होता जिससे विद्यार्थियों के राजनैतिक मूल्यों में किसी प्रकार का अन्तर आए।

शैक्षिक निहितार्थ

अध्ययन के प्रमुख शैक्षणिक महत्त्व निम्नलिखित हैं-

1. प्रस्तुत अध्ययन जयपुर जिले के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के प्रति विचारों को स्पष्ट कर सकेगा।

Copyright©authors

ISSN 2277-2359
Vol-11-Issue-12
December- 2019

2. प्रस्तुत अध्ययन उच्च माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम निर्माताओं के लिए निर्देश दे सकेगा।

3. प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों में नैतिक मूल्ययुक्त शिक्षा के प्रति अभिरूचि उत्पन्न करने की योजनाओं का आधार बना सकेगा।

4. प्रस्तुत अध्ययन शिक्षा नियोजकों, शिक्षा विभाग के अधिकारियों, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान के अधिकारियों को उनके कार्यक्रमों के निवेशात्मक भूमिका प्रदान करेगा।

5. प्रस्तुत अध्ययन नैतिक शिक्षा के शिक्षण के विकास हेतु सामाजिक व दार्शनिक पृष्ठभूमि प्रदान करेगा।

6. प्रस्तुत अध्ययन भावी शोधकत्र्ताओं को नैतिक मूल्यों की दिशा में शोधकार्य करने हेतु पे्ररित करेगा।

7. प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व निर्माण में भूमिका निभा सकेगा।

8. प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्य, धार्मिक मूल्य, आर्थिक मूल्य व राजनैतिक मूल्यों का विकास कर सकेगा।

9. प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों को सुनागरिक बनने के लिए प्रेरित कर सकेगा।

10. प्रस्तुत अध्ययन पाठ्यक्रम निर्माताओं को पाठ्यक्रम में नैतिक मूल्यों का समावेश करने के लिए प्रेरित कर सकेगा।

11. प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों को, मूल्यों को अपने जीवन में उतारने की प्रेरणा दे सकेगा।

12. प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों को सदाचरण, नैतिकता, शिष्टाचार सहयोग, व ईमानदारी आदि गुणों को जीवन में शामिल करने के लिए प्रेरित कर सकेगा।

13. प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों में मानवता की भावना का विकास कर सकेगा।

14. प्रस्तुत अध्ययन शिक्षण को नैतिकता से जोड़ सकेगा।

15. प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों व अध्यापकों को नैतिक मूल्यों के प्रति दिशा निर्देश दे सकेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

Copyright©authors

ISSN 2277-2359
Vol-11-Issue-12
December- 2019

1. बघेला, एच.एस. (2007), ''शिक्षा तथा भारतीय समाज'', राजस्थान प्रकाशन, जयपुर।
2. भटनागर सुरेश (2006), ''शिक्षा के मनोवैज्ञानिक तथा शिक्षण शास्त्र'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
3. चैबे, ए.पी. (2004-05), शैक्षिक मनोविज्ञान के मूलाधार'' इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
4. कपिल, एच.के. (1992), ''अनुसंधान विधियां'': हर प्रसाद भार्गव, आगरा।
5. कोठारी, डी. एस (1996), ''कल्टीवेशन ऑफ़ मोरल वेल्यूज'' कोठारी आयोग रिपोर्ट।
6. लोढ़ा, डॉ. महावीर मल (2007), ''नैतिक शिक्षा'' विविध आयाम: राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
7. मलैया, के.सी. (1993), ''नैतिक शिक्षा शिक्षण'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
8. नेगी, सुरेन्द्र सिंह (2000), ''नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता: आदित्य पब्लिशर्स, बीना (म.प्र.) ।
9. पाण्डेय, रामशक्ल एवं मिश्र, करूणाशंकर (1991), ''मूल्य शिक्षा शिक्षण'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
10. पाठक, पी. डी., ''भारती शिक्षा और उसकी समस्याएँ'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
11. पाठक, पी. डी. (2009), ''शैक्षिक मनोविज्ञान'' अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
12. राय, पारसनाथ (1989), ''अनुसंधान परिचय: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
13. रामगढ़िया, निर्मल सिंह (2006) ''मूल्यपरक शिक्षा'', गुरूजी बुक कम्पनी जयपुर।
14. रूहेला, एस.पी. (2007), ''विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा'', अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा-7क्षक अनुसंधान विधियाँ'', अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा-7.
15. सरीन एवं सरीन (2007), ''शैक्षिक समस्याएं तथा सम्भावनाएं'': चिन्मय प्रशासन, चैड़ा रास्ता, जयपुर।
16. सिंह, मया शंकर (2008), 'अध्यापकों के नैतिक शिक्षा एवं अध्यात्मिक मूल्यों में गिरावट'' (अध्यापक शिक्षा) अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स, दिल्ली।
17. सूरति, उर्वशी (1974), ''नैतिक शिक्षा और बाल विकास'': प्रभात प्रकाश, चावड़ी बाजार नई दिल्ली।
18. शर्मा, राजेन्द्र (1998), ''नैतिक मूल्य शिक्षा'': गुरूजी बुक कम्पनी, जयपुर।
19. शर्मा आर. ए. (2008), ''शिक्षा अनुसंधान'' लायल बुक डिपो, मेरठ।

Copyright©authors